International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 10 Ver. I||October 2018 || PP 63-71

राजस्थान में शेखावाटी के पर्यटन स्थलों का अध्ययन

डॉ. रवि शर्मा
प्राचार्य , आर. के. जे. के. बरासिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय , सूरजगढ़ , झुंझुनूं , (राज.) 333029

शोध सारांश
शेखावाटी राजस्थान में हरियाणा राज्य की सीमा से लगा हुआ एक प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है। शेखावाटी क्षेत्र में झुंझुनू, सीकर और चुरू शामिल है । शेखावाटी प्रदेश में सीकर एवं झुन्झुनूं जिले की सभी तहसीलों को सम्मिलित किया है। झुन्झुनूं के समान सीकर भी जयपुर राज्य का भाग रहा है। यहाँ के शासकों ने शेखावाटी को अलग राज्य बनाने के अनेक प्रयत्न किये किन्तु सफल न हो सके तथा यह मुगल साम्राज्य का अंग और जयपुर राज्य के अन्तर्गत ही रहा। शेखावाटी को अपने इतिहास और ऐतिहासिक संदर्भों के लिए जाना जाता है। शेखावाटी राजस्थान का एक ऐसा पर्यटन स्थल है जहां पर कई महल और प्राचीन किले स्थित हैं जो इसकी सुंदरता को बढ़ाते हैं। शेखावाटी को राजस्थान की ओपन आर्ट गैलरी के रूप में मान्यता दी गई है। शेखावाटी शहर पर्यटन की दृष्टि के काफी संपन्न है और यहां पर्यटकों के घूमने के लिए बहुत महत्वपूर्ण स्थान हैं ।

परिचय

आधुनिक समय में पर्यटन क्षेत्र में निरन्तर विकास हो रहा है। यह भी माना जाने लगा है, कि यह स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। विकसित देशों में अवकाश का अधिकांश समय घूमने और यात्रा करने में बिताया जाता है। नये स्थानों की खोज, तीर्थाटन, व्यापार–विनिमय आदि कारणों से पर्यटन की सोच का विस्तार हुआ।

पर्यटन शब्द का अर्थ है, भ्रमण अर्थात् चहुँदिशी घुमना। अंग्रेजी शब्द श्ज्वनतपेउश् का संबंध ज्वनत से है, जो लैटिन भाषा से लिया गया है। पर्यटन शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1811 ई. में किया गया। ज्वतदे शब्द का मतलब एक औजार से है, यह एक पहिए की तरह गोल होता है। इसी ज्वतदवे शब्द से यात्रा चक्र या पैकेज टूर का विचार निर्मित हुआ है। लगभग सन् 1646 में इस शब्द का प्रयोग विभिन्न स्थलों की यात्रा, मनोरंजन, भ्रमण करने के लिए किया गया था। ज्वनत एक हिब्रू शब्द है जो कि हिब्रू शब्द ज्वतीं से लिया गया है। इसका अर्थ है अध्ययन अथवा खोज। ज्वनत शब्द यहूदी विधान से संबंधित है। यहूदी विधान यहूदियों के रहन–सहन का वर्णन करता है। ज्वनत का अर्थ है कि यात्री किसी विशेष स्थान पर जाकर खोज करता है। ठीक इसी प्रकार एक पर्यटक की जिज्ञासा होती है कि वह उस स्थान के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करें जिसके बारे में उसने सुना है और साथ ही उसको व्यापार व रोजगार की संभावनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने, स्वास्थ्य एवं शिक्षा लाभ, पर्यावरण व मनोरंजन के संबंध में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने की आकांक्षा रहती है।

मानव प्रत्येक युग में घूमता रहा है। प्राचीन समय से ही मानव में यात्रा की प्रबल भावना रही है। उस समय भ्रमण का मुख्य उद्देश्य भोजन की खोज करना था। खाने हेतु कंदमूल फल एवं शिकार की खोज में मानव को भ्रमण करना पड़ता था। मानव को रहने, सोने, आश्रम करने के लिए सुरक्षित ऐसे स्थलों को खोजना होता था, जहाँ पर वे जंगली जानवरों आदि से सुरक्षित रह सकें एवं सो सकें। इस प्रकार मानव ने आरंभ में जीविका की तलाश तथा सुरक्षा कारणों से भ्रमण किया। मानव ने अकेले रहने की अपेक्षा समाज में रहना पसंद किया अतः उसने नए लोगों से परिचय, जानकारी तथा दोस्ती करने के लिए यात्रा एवं भ्रमण प्रारंभ किया।

जैसे–जैसे मानव का सांस्कृतिक विकास होता गया, उसकी जिज्ञासायें भी बढ़ती गयी। उसमें जिज्ञासा जागृत हुई कि नए स्थान देखे जायें जहाँ भोजन मिले, रहने के स्थान भी सुरक्षित हों, पीने का पानी भी आस–पास ही उपलब्ध हो तथा अन्य मूलभूत आवश्यकताओं की वस्तुएं इकट्ठी की जा सकें। अतः मानव ने दूर–दूर के स्थानों को देखने की लालसा में भ्रमण किया तथा जो व्यक्ति अधिक भ्रमणशील रहा उसकी जानकारी अन्य लोगों से बढ़ गई। अन्य लोगों ने भी देखा–देखी नई जानकारियां प्राप्त करने हेतु यात्राएं आरंभ की। इस प्रकार नये क्षेत्रों की जानकारी तथा ज्ञान की खोज में निकलने वालों की संख्या बढ़ती गयी। लोगों ने समूहों में भ्रमण करना शुरू कर दिया। दूसरे क्षेत्रों में जाने पर अदला–बदली की क्रिया प्रारंभ हुई जिसने बाद में व्यापार का रूप ले लिया तथा लोग व्यापार के लिए यात्रा पर निकलने लगे। कुछ और समय बाद मानव के भ्रमण का मुख्य उद्देश्य अपने धर्म का विकास करने की भावना भी रही जो बाद में धर्म प्रचार के रूप में विकसित हुई। भारत में हिन्दू, यूरेशिया में इस्लाम, यूरोप में ईसाई तथा पूर्वी एशिया में बौद्ध धर्म के प्रचार– प्रसार हेतु यात्राएं की गयी। इस प्रकार प्राचीन काल से ही मानव आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यों से अपने ग्राम, नगर, प्रान्त तथा देश से बाहर जाते रहे हैं।

शेखावाटी का इतिहास :–

शेखावाटी को मत्स्य साम्राज्य का हिस्सा माना जाता था। शेखावटी को 'मनुस्मृति' के अनुसार 'ब्रह्मऋषि देश' में रखा गया था। इसके बाद रामायण काल तक इसे 'मरुकांतार देश' में शामिल किया गया। महाभारत के समय शेखावाटी पर मत्स्य साम्राज्य का शासन था जो मछुआरों के वंशज थे। प्रसिद्ध हिन्दू 'वेदों' को इस जगह लिखा और संकलित किया गया था।

प्राचीन काल में शेखावाटी क्षेत्र आजाद गणराज्य राज्यों का एक संयोजन था, जिसे 'जनपद' के नाम से जाना जाता था। जनपद आर्यों' के शासनकाल में विकसित हुए थे। शेखावत राजपूत यहां के प्रसिद्ध शासक रहे हैं, जिन्होंने इसे गुप्त वंश के पतन के बाद इसे कैमखानियों से ले लिया था। मंडन की लड़ाई रेवाड़ी के शेखावतों बनाम राव मित्र सेन अहीर और पीरो खान बालोची के बीच लड़ी गई थी। इस क्षेत्र पर आजादी तक शेखावत का शासन रहा था।

स्थिति एवं विस्तार–

अध्ययन का क्षेत्र शेखावाटी क्षेत्र लिया गया है। शेखावाटी का नाम अति प्राचीन नहीं है। विक्रमी संवत् 1502 (1445 ई.) में राव शेखा में इस इलाके को जीत कर एक छोटे से राज्य की स्थापना की तथा शेखा के वंशज शेखावत कहलाये, जिन्होनें सीकरवाटी व झुन्झुनूंवाटी पर अधिकार कर विस्तृत राज्य स्थापित किया, जो शेखावाटी नाम से प्रसिद्ध हुआ। राजस्थान में झुन्झुनूँ और सीकर जिला पूर्णतया जबकि चुरू जिले का कुछ भाग शेखावाटी अंचल में आते हैं।

शेखावाटी क्षेत्र राजस्थान के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित है। इसकी भौगोलिक स्थिति $27^{o}21'$ से $28^{o}34'$ उत्तरी अक्षांश एवं $74^{o}41'$ पूर्व से $76^{o}06'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थिति है। इस प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 13,784 वर्ग किमी है। अध्ययन क्षेत्र में सीकर की नौ तहसीलें, झुझनू की आठ तहसीलें शामिल है शेखावाटी क्षेत्र के उत्तर–पूर्व में हरियाणा, पूर्व में मेवात क्षेत्र, उत्तर–पश्चिम जांगल प्रदेश, दक्षिण–पश्चिम में मारवाड़ क्षेत्र, दक्षिण–पूर्व में ढूँढाड़ (जयपुर), दक्षिण में अजमेर क्षेत्र पड़ता है। यहाँ का पूर्वी भाग में अरावली पर्वत तथा पश्चिम भाग में मरूस्थल का विस्तार है। यहाँ आन्तरिक अपवाह प्रणाली मौजूद है, कांतली यहाँ की मुख्य नदी हैं।

यहाँ अर्द्धशुष्क जलवायु पाई जाती है जिसमें स्टेपी प्रकार की वनस्पति मिलती है। जिसमें खेजड़ी बबूल, बैर, कैर इत्यादि यहा के मुख्य वृक्ष है। यहाँ गर्मियों के दिनों में दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम से गर्म हवाए चलती है जिन्हें 'लू' कहते है। इस क्षेत्र में मरूस्थल का विस्तार होने के कारण यहाँ भूरी रेतीली मिट्टी का विस्तार है जिसमें खरीफ के मौसम में बाजरा, मोठ, मूंग, ग्वार तथा रबी के मौसम में गेहूँ सरसों मैथी इत्यादि फसलें ली जाती है यहा वर्षा का वार्षिक औसत 25 से 50 सेमी तथा तापमान गर्मियों में अधिकतम 450 से 480 तक तथा सर्दियों में 40 से 60 से0 से नीचे चले जाते है। फतेहपुर (सीकर) तथा पिलानी (झुझनूँ) यहाँ के सबसे ठण्डे स्थान है।

यहाँ से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या –11 (52) तथा 65 गुजरते है। इस क्षेत्र में झुंझनूँ जिले की कुल जनसंख्या 21,37,045, लिंगानुपात – 950, साक्षरता दर 74.13 प्रतिशत व जनघनत्व 361 प्रतिव्यक्ति तथा सीकर की जनसंख्या 26,77,737, लिंगानुपात– 944, साक्षरता दर 72.98 प्रतिशत व जनघनत्व 346 प्रतिव्यक्ति किमी. है।

शेखावाटी राजस्थान के स्टेपी मरूस्थल–प्रदेश में सम्मिलित है, जो अरावली श्रेणी के पश्चिम भाग में 300 मि.मी. से 500 मि.मी. वर्षा वाले क्षेत्र के उत्तर–पूर्व दिशा में विस्तृत है। यह प्रदेश उष्ण मरूस्थल प्रदेश की अपेक्षा चट्टानी मरूस्थल के बलुआ क्षेत्र में विलीन हो जाता है। स्टेपी मरूस्थल का उत्तरी–पूर्वी उत्थिल क्षेत्र अपेक्षाकृत कम बलुआ है, जिसमें पूर्वी सीकर एवं झुन्झुनूं की तहसीलें सम्मिलित की जाती है। यहाँ की तीव्र ढ़ालों पर प्रवाहित जल की लगातार बहाव क्रिया ने बालू–जमावों को कम कर भूमि को समतल कर दिया है, जहाँ अपेक्षाकृत मानव–बसाव अधिक केन्द्रित है।

शेखावाटी पर्यटन में घूमने लायक प्रमुख स्थल दृ

शेखावाटी क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि के काफी संपन्न है अगर आप शेखावाटी घूमने की योजना बना रहें हैं और इसके पास स्थित पर्यटन स्थलों की सैर करना चाहते हैं तो नीचे हम शेखावाटी क्षेत्र के पर्यटन स्थलों की जानकारी दे रहे हैं, जहां आपको अपनी यात्रा के दौरान जरुर जाना चाहिए।

शेखावाटी में घूमने के लिए ऐतिहासिक जगह लक्ष्मणगढ़ का किला दृ

लक्ष्मणगढ़ का किला बहुत ही सुंदर संरचना है और पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। आपको बता दें कि इस किले की सबसे खास बात यह है कि यह किला इतनी ऊंचाई पर बना है कि शहर में किसी भी जगह से दिखाई देता है। लक्ष्मणगढ़ का किला करीब 200 साल पुराना है और इसके किले की सबसे अजीब बात यह है, जो इसको दूसरे पहाड़ी किलों से अलग करती है वो यह है कि इस किले का निर्माण बिखरी हुई चट्टानों पर किया गया है जिसके बाद

भी यह किला पूरी तरह से स्थिर है। इस किले में एक सुंदर बगीचा भी है जो शाम के समय घूमने की एक सुंदर जगह है। किले के शीर्ष पर एक मंदिर भी है जो बहुत ही शांत और सुंदर है। अगर आप राजस्थान के शेखावाटी जाने की योजना बना रहें हैं तो आपको एक बार जरुर इस किले को देखने के लिए जाना चाहिए।

शेखावाटी में मशहूर पर्यटन स्थल ले प्रिंस हवेली

बहुत से लोग अक्सर इस हवेली के नाम को सुनकर आश्चर्य में पड़ जाते हैं कि राजस्थान में स्थित इस हवेली का नाम फ़्रांसिसी क्यों है। बता दें कि इस प्राचीन हवेली को नादीन ले प्रिंस के नाम के एक एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी डिजाइनर द्वारा पुनर्निर्मित किया गया था क्योंकि यह हवेली पूरी तरह से जीर्ण और नष्ट हो गई थी। यह हवेली शहर के केंद्र में स्थित है जिसकों अब एक सुंदर और शाही होटल के रूप में बदल दिया गया है। ले प्रिंस हवेली में पारंपरिक राजस्थानी के भूजन के साथ फ्रांसीसी भोजन भी परोसा जाता है। इस हवेली की यात्रा करना आपको सच में एक यादगार अनुभव देगा।

शेखावाटी के फेमस दर्शनीय स्थल मंडावा किला

मंडावा किला शेखावाटी का एक और प्रमुख किला है जिसको संरक्षण, सुरक्षित और राजस्व सृजन के लिए अब एक होटल के रूप में बदल दिया है। मंडावा किला एक आलीशान और एक भव्य होटल है जो मुगल शैली और राजस्थानी शैली की वास्तुकला का अदभुद मिश्रण है। यह किला देखने और ठहरने के लिए एक बहुत अच्छी जगह है। आपको बता दें कि इस किले में कई सुंदर चित्रित हवेलियाँ हैं जो पर्यटकों को बेहद आकर्षित करती है। इस होटल में आप राजस्थान राज्य से संबंधित कई ऐतिहासिक कलाकृतियों और प्राचीन वस्तुओं को भी देख सकते है जो आपको इस राज्य के बारे में और अधिक जानकारी देंगी। आप इस किले की यात्रा अपने परिवार के लोगों और दोस्तों के साथ कर सकते हैं।

शेखावाटी टूरिज्म में घूमने लायक जगह नवलगढ़

नवलगढ़ शेखावाटी से थोड़ी दूरी पर स्थित एक छोटा शहर है। "हवेलियों की भूमि" के रूप में नवलगढ़ का शहर झुंझुनू शहर से लगभग 30 किमी दूर स्थित है। नवलगढ़, राजस्थान के मारवाड़ी व्यवसायी परिवारों की मातृभूमि है। आपको बता दें कि नवलगढ़ में मुख्य दो किले हैं जिनमें एक रूप निवास पैलेस और दूसरा शीश महल है। इन दोनों महलों में कई अद्भुत हवेलियाँ हैं। यह किले कुछ कुशल कलाकारों द्वारा किए गए रंगीन चित्रों से भरे हुए हैं। यहां हर पेंटिंग के पीछे एक दिलचस्प कहानी है, अगर आप एक कला प्रेमी हैं तो आपको इस नवलगढ़ की यात्रा जरुर करना चाहिए।

शाकंभरी (सकराय) माता मेला

देशभर में मां शाकंभरी के तीन शक्तिपीठ हैं। पहला प्रमुख पीठ राजस्थान के सीकर जिले में उदयपुरवाटी के पास सकराय माताजी के नाम से स्थित है। दूसरा स्थान राजस्थान में ही जयपुर जिले के सांभर कस्बे में शाकंभर के नाम से स्थित है और तीसरा स्थान उत्तरप्रदेश के मेरठ के पास सहारनपुर में 40 किलोमीटर की दूर पर स्थित है।

मां शाकंभरी की पहली प्रमुख पीठ राजस्थान के सुरम्य घाटियों के बीच बना शेखावाटी प्रदेश के सीकर जिले में स्थित है। कहा जाता है कि महाभारत काल में पांडव अपने भाइयों व परिजनों का युद्ध में वध (गोत्र हत्या) के पाप से मुक्ति पाने के लिए अरावली की पहाड़ियों में रुके थे। युधिष्ठिर ने पूजा–अर्चना के लिए देवी मां शकराय की स्थापना की थी, वहीं अब शाकंभरी तीर्थ है।

श्री शाकंभरी माता का यह सकराय गाँव अब आस्था का केंद्र बन चुका है। यह मंदिर सीकर से 56 किमी दूर अरावली की हरी वादियों में बसा है। झुंझनूं जिले के उदयपुरवाटी के समीप यह मंदिर उदयपुरवाटी गाँव से 16 किमी दूरी पर है। यहाँ के आम्रकुंज, स्वच्छ जल का झरना आने वाले भक्तों का मन मोह लेते हैं। आरंभ से ही इस शक्तिपीठ पर नाथ संप्रदाय का वर्चस्व रहा है, जो आज तक भी कायम है।

यहाँ देवी शकराय, गणपति तथा धन स्वामी कुबेर की प्राचीन प्रतिमाएं भी देखने को मिलती हैं। इस मंदिर के आसपास जटाशंकर मंदिर तथा श्री आत्ममुनि आश्रम भी हैं। नवरात्रि के दौरान 9 दिनों में यहाँ उत्सव का आयोजन होता है। सालभर इस मंदिर में भक्तों का तांता लगा रहता हैं।

लोहार्गल मेला

राजस्थान में शेखावाटी इलाके के झुन्झुनूं जिले से करीब 70 किमी. दूर आड़ावल पर्वत की घाटी में बसे उदयपुरवाटी कस्बे से करीब दस किमी. की दूरी पर लोहार्गल धाम स्थित है। लोहार्गल का अर्थ है– वह स्थान जहाँ लोहा गल जाए। पुराणों में भी इस स्थान का जिक्र मिलता है। नवलगढ़ तहसील में स्थित इस तीर्थ 'लोहार्गल जी' को स्थानीय अपभ्रंश भाषा में लुहागरजी कहा जाता है।

महाभारत युद्ध समाप्ति के पश्चात पाण्डव जब अपने भाई बंधुओं और अन्य स्वजनों की हत्या करने के पाप से अत्यंत दुःखी थे, तब भगवान श्रीकृष्ण की सलाह पर वे पाप मुक्ति के लिए विभिन्न तीर्थ स्थलों के दर्शन करने के लिए गए। श्रीकृष्ण ने उन्हें बताया था कि जिस तीर्थ में तुम्हारे हथियार पानी में गल जाए वहीं तुम्हारा पाप मुक्ति का मनोरथ पूर्ण होगा। घूमते–घूमते पाण्डव लोहार्गल आ पहुँचे तथा जैसे ही उन्होंने यहाँ के सूर्यकुण्ड में स्नान किया, उनके सारे हथियार गल गये। उन्होंने इस स्थान की महिमा को समझ इसे तीर्थ राज की उपाधि से विभूषित किया। लोहार्गल से भगवान परशुराम का भी नाम जुड़ा हुआ है। कहा जाता है कि इस जगह पर परशुराम जी ने भी पश्चाताप के लिए यज्ञ किया तथा पाप मुक्ति पाई थी। विष्णु के छठें अंश अवतार ने भगवान परशुराम ने क्रोध में क्षत्रियों का संहार कर दिया था, लेकिन शान्त होने पर उन्हें अपनी गलती का अहसास हुआ। यहाँ एक विशाल बावड़ी भी है, जिसका निर्माण महात्मा चेतनदास जी ने करवाया था। यह राजस्थान की बड़ी बावड़ियों में से एक है। पास ही पहाड़ी पर एक प्राचीन सूर्य मन्दिर बना हुआ है। इसके साथ ही वनखण्डी जी का मन्दिर है। कुण्ड के पास ही प्राचीन शिव मन्दिर, हनुमान मन्दिर तथा पाण्डव गुफा स्थित है। इनके अलावा चार सौ सीढ़ियाँ चढ़ने पर मालखेत जी के दर्शन किए जा सकते हैं।

इस प्राचीन, धार्मिक, ऐतिहासिक स्थल के प्रति लोगों में अटूट आस्था है। भक्तों का यहाँ वर्ष भर आना–जाना लगा रहता है। यहाँ समय– समय पर विभिन्न धार्मिक अवसरों जैसे ग्रहण, सोमवती अमावस्या आदि पर मेला लगता है किंतु प्रतिवर्ष कृष्ण जन्माष्टमी से अमावस्या तक आयोजित होने वाले विशाल मेले का विशेष महत्व है, जो पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र रहता है। श्रावण मास में भक्तजन यहाँ के सूर्यकुंड से जल से भर कर कांवड़ उठाते हैं। यहाँ प्रति वर्ष माघ मास की सप्तमी को सूर्यसप्तमी महोत्सव मनाया जाता है, जिसमें सूर्य नारायण की शोभायात्रा के अलावा सत्संग प्रवचन के साथ विशाल भंडारे का आयोजन किया जाता है। यहाँ चौबीस कोसीय परिक्रमा भी की जाती है। परिक्रमा के बाद नर–नारी कुण्ड में स्नान कर पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं।

शेखावाटी पर्यटन में देखने वाली जगह चूरू

चूरू थार रेगिस्तान के किनारे पर और सुनहरी रेत के टीलों के बीच बसा हुआ एक छोटा सा शहर है जो अपनी कई हवेलियों, भित्ति चित्रों और अद्वितीय वास्तुकला से प्रसिद्ध है। आपको बता दें कि चूरू पर्यटन स्थल को डेजर्ट गेटवे टू थार रेगिस्तान 'के रूप में जाना जाता है और यह उत्तरी राजस्थान में ऐतिहासिक शेखावाटी क्षेत्र में स्थित है। अगर आप शेखावाटी की यात्रा करते हैं, तो आपको चुरू घूमने के लिए जरुर जाना चाहिए। यह पर्यटन स्थल और वास्तुकला के लिए पर्यटकों के बीच बेहद लोकप्रिय है। चुरू के प्रमुख पर्यटन स्थलों में कन्हैया लाल बागला और सुराना और इसका 400 साल पुराना किला शामिल है।

शेखावाटी में घूमने की प्राचीन जगह बादलगढ़ किला

बादलगढ़ किला शेखावाटी क्षेत्र के झुंझुनू जिले में स्थित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल है, जहां आपको घूमने के लिए एक बार जरुर जाना चाहिए। आपको बता दें कि इस किले का निर्माण16 वीं शताब्दी की शुरुआत में एक मुस्लिम शासक नवाब फजल खान के शासन में किया गया था। बादलगढ़ किला एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है और इसके आस–पास का वातावरण बहुत ही हरा–भरा है। अगर आप एक इतिहास प्रेमी हैं तो आपको इस किलों को घूमने के लिए जरुर जाना चाहिए।

सीकर शेखावाटी में सबसे महत्वपूर्ण जिलों और पर्यटन स्थलों में से एक है। सीकर पर्यटकों के लिए आसपास घूमने, फोटो वॉक करने और स्मारकों को देखने के लिए एक बहुत अच्छी जगह है। यहां स्थित महल, हवेलियां पर्यटकों को बेहद आकर्षित करती हैं और यहां आने वाले के बाद उन्हें निराश होकर वापस नहीं जाना पड़ता। शेखावाटी क्षेत्र के अन्य पर्यटन आकर्षणों के साथ मिलकर सीकर अपनी कई अनसुनी कहानियों, किलों और युद्धों के इतिहास से भरा हुआ है। अगर आप शेखावाटी की यात्रा कर रहें हैं तो आपको एक बार सीकर पर्यटन स्थल की यात्रा करने के लिए जरुर जाना चाहिए।

शेखावाटी में देखने लायक स्थान पिलानी

पिलानी राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में स्थित एक छोटा सा शहर है जो देश के सबसे प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों में से एक होने के प्रसिद्ध है, जिसका नाम बिट्स पिलानी है। यह शहर ग्रांड हैवेलिस और श्रद्धेय मंदिर का केंद्र भी है।

पिलानी में पर्यटन स्थलों की यात्रा करना आपके लिए बेहद आनंदमय साबित हो सकता है। पिलानी शिव गंगा, सरस्वती मंदिर और पंचवटी जैसे आकर्षक स्थानों से भरपूर है जहां की यात्रा आपको जरुर करना चाहिए।

शेखावाटी घूमने जाने का सबसे अच्छा समय

शेखावाटी की यात्रा साल में कभी भी की जा सकती है लेकिन यहां गर्मियों के मौसम में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस पहुँच जाता है। अगर आप एक सुखद यात्रा का अनुभव लेना चाहते हैं तो आपको सर्दियों के मौसम में शेखावाटी की यात्रा करना चाहिए क्योंकि सर्दियों का मौसम शहर की यात्रा करने के लिए अच्छा है। इस मौसम में यहां का औसत तापमान तापमान 26 डिग्री सेल्सियस रहता है और रात के समय 9 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। शेखावाटी की यात्रा करने के लिए सबसे अच्छे महीने नवंबर से मार्च तक के होंगे।

शेखावाटी से केस स्ट्डी :

पहाड़ी पर्यटन के लिये प्रसिद्व राज्य पर्यटकों की बढ़ती संख्या के साथ सामंजस्य बनाने में असफल रहते हैं जहां होटलों में उपयुक्त रूप से ठहराने की व्यवस्था नहीं हो पाती हैं, हालांकि सभी बड़े पहाड़ी पर्यटन स्थलों पर कई अच्छे होटल उपलब्ध हैं। हिमाचल प्रदेश पर्यटन ने राज्य के मैदानी किनारे के पास मध्यम ऊँचाई पर छोटे आकार के तीन नये पहाड़ी सैरगाह बनाने का प्रस्ताव दिया है।

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में केस स्ट्डी के लिए झुंझुनूं जिले के मंडावा को चुना गया है, जहां पर ग्रामीण पर्यटन को विकसित किया जा सकता है, इसके अलावा शेखावाटी प्रदेश में डूंडलोद, महनसर, नवलगढ़, मलसीसर आदि क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण स्वदेशी पर्यटकों के साथ–साथ विदेशी पर्यटकों अपनी ओर आकर्षित करते है। वहीं सीकर जिले में हर्ष पर्वत, लक्ष्मणगढ़, रामगढ़ शेखावाटी आदि क्षेत्रों में उक्त विशेषताऐं पाई जाती है। इसके अलावा इन सभी क्षेत्रों में भित्ति चित्रों से चित्रित हवेलियाँ पर्यटकों को आकर्षित करती है।

वहीं राज्य में अधिकतर पर्यटन स्थल मैदानी भागों में स्थित है, सिर्फ ऐतिहासिक किलों एवं मन्दिरों को छोड़कर जहाँ पर पर्यटकों की पहुँच आसान होती है। जिससे यहाँ पर पर्यटकों की संख्या सर्वाधिक देखी जाती है। ऐसी आशा की जाती है कि यह उपाय पुराने पहाड़ी स्टेशनों की पर्यटक पसन्द भी बरकरार रखेगा क्योंकि यहाँ से पर्यटकों की संख्या कम होगी। ज्यादा आय उपार्जन के उद्देश्य से राज्य भविष्य में पर्यटक नगर निर्माण की योजना बना रहा है। यह नगर अप्रवासी भारतीयों के लिये उपयुक्त होने वाला हैं।

शेखावाटी प्रदेश में विशाल पुरानी हवेलियाँ वास्तुशिल्प का चमत्कारिक कलाकृति है जो 18 वीं शताब्दी से 20 वीं शताब्दी के मध्य में मारवाड़ी व्यापारियों के द्वारा बनवाई गई थी, लेकिन वर्तमान में ये हवेलियाँ शेखावाटी के पर्यटन का प्रमुख आकर्षण बनी हुई है। लेकिन वर्तमान में अत्यधिक पर्यटन एवं रखरखाव के अभाव में इन हवेलियों में रखी हुई संपत्तियाँ, भित्ति चित्र, पेंटिंग पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। अतः इनके संरक्षण के लिए निर्धारित मात्रा में पर्यटन को प्रतिदिन के हिसाब से अनुमति दी जानी चाहिए। साथ ही समय–समय पर सभी प्रकार के अद्वितीय संकलन का संरक्षण किया जाना चाहिए।

सुझाव

- शेखावाटी प्रदेश में पर्यटकों के आगमन को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्र में स्थित सभी पर्यटन स्थलों को परिवहन मार्गों के द्वारा सुनियोजित तरीके से संबंद्ध किया जाना चाहिए, इसके लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार के द्वारा मिलकर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में उचित आवागमन की सुविधा उपलब्ध कराई जा सकती है।
- पर्यटन से संबंधित विज्ञापनों का उपयोग प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, जिससे पर्यटकों को पर्यटन स्थलों पर आवास सुविधा एवं उनके रूचि की अन्य सेवाओं की जानकारी उपलब्ध हो सकें।
- स्थानीय एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या को देखते हुए क्षेत्र में आवास सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिए। सीकर जिले में वर्ष 2020 के अनुसार विश्राम गृहों की कुल संख्या 46 है, जिनमें 687 कमरों के अन्तर्गत 1339 पर्यटकों के ठहरने की व्यवस्था हैं, जबकि झुंझुनूं जिल में विश्राम गृहों की कुल संख्या 48 है, जिनमें 1574 कमरों के अन्तर्गत 3070 पर्यटकों के ठहरने की व्यवस्था हैं। इस प्रकार शेखावाटी प्रदेश में कुल 94 कमरों के अन्तर्गत 4644 पर्यटकों को ही ठहराया जा सकता है, जबकि प्रदेश में वर्ष 2020 के दौरान आने वाले देशी एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या क्रमशः 129649 तथा 9224 रही है, जो कि क्षमता से 30 गुना अधिक है। अतः प्रदेश में पर्याप्त विश्राम गृहों का अभाव होना पर्यटन को दुष्प्रभावित कर रहा है।
- सार्वजनिक परिवहन पार्किंग में सुधार के लिए पंचायतों एवं नगर निकायों को व्यापक योजना विकसित की जानी चाहिए, जो प्रदेश के सांस्कृतिक पहलुओं से संबंधित हो।
- क्षेत्र में केन्द्र सरकार द्वारा क्रियान्वित 'स्वच्छ भारत योजना'' को नियोजित तरीके से संचालित किया जाना चाहिए, जिसके तहत जलीय पर्यटन स्थलों के साथ–साथ अन्य ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों पर स्वच्छता को विकसित किया जा सके। साथ ही महिला एवं पुरूषों के लिए शौचालय की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- यह देखा गया है कि पर्यटन स्थलों के आस पास चोरों, भिखारियों, ठगों एवं चैन स्नेकरों का डर हमेशा बना रहता है, अतः इनसे सुरक्षा के लिए पर्यटन स्थलों के आस पास सुरक्षा चौकी की स्थापना किया जाना आवश्यक है, साथ ही बिना वर्दी के पुलिस एवं स्थानीय युवाओं को पुलिस मित्र के रूप में तैनात किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष :–

शेखावाटी प्रदेश अपनी अलग खान–पान एवं संस्कृति के लिए जाना जाता है, अतः क्षेत्र में पारम्परिक पर्यटन के साथ ग्रामीण पर्यटन के लिए विकसित किया जाना चाहिए। पर्यटकों को उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सके इसके लिए सरकार के द्वारा टूरिस्ट रिसेप्शन सेण्टर स्थापित किये गए है लेकिन पर्याप्त संख्या में कर्मचारी उपलब्ध नहीं होने की वजह से यह अधिक प्रभावी नहीं हैं, अतः पर्याप्त कर्मचारियों की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए स्थानीय शिक्षित लोगों या पर्यटन स्थलों की जानकारी रखने वाले युवाओं को सरकारी परिचय पत्र के साथ नियुक्त किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची :–

1. अग्रवाल, अनिता, (1990) ''राजस्थान में पर्यटन योजना'' पृ. सं. 21, 22 नई दिल्ली।
2. आनन्द एन. के. (2009) पर्यटन में पंचायती राज की भूमिका, केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका, नई दिल्ली, पृ सं. 10–17
3. प्रो. इन्द्रपाल, (1992) जयपुर सिटी प्रदेश, इण्डियन ज्योग्राफी कांग्रेस, जयपुर दिस. 27–29, पृ.सं. 13, प्रकाशन, जयपुर
4. ईरिस्किलन के. डी., (1992) "राजपूताना गजिटियर्स, द वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स रेजिडेंसी एण्ड बीकानेर" ग्प्प्–विटेज बुक, गुड़गाँव (रिप्रिंटेड, 1992)
5. ईरिक, लाज, (1995) "ट्यूरिज्म डेस्टिनेशन मैनेजमेट इश्यू एनालिसेस एण्ड पोलिसी" ग्टप्प्ए लंदन
6. एच. एस. मन (1974) डजर्ट इकोसिस्टम एण्ड इम्प्रूवमेन्ट पृ सं. 1–38
7. ए.के. भाटिया, (1986) ''ट्यूरिज्म डवलपमेन्ट प्रिंसिपल एण्ड प्रेक्टिसेज'' स्टर्लिंग पब्लिशिंग प्रा.लि. नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, पृ.सं. 95
8. एल. पी. भारा (1998) मेन एण्ड द डजर्ट, काजरी, जोधपुर. पृ. सं. 17–40
9. कोठारी सी. आर. (2001) रिसर्च मैथोलोजी, मैथड एण्ड टेक्निक, विश्व प्रकाशन नई, दिल्ली, पृ सं. 113–125
10. खान, एम. ए., (2005) " प्रिंसिपल ऑफ ट्यूरिज्म डवलपमेन्ट", अनमोला प्रकाशन, नई दिल्ली
11. गुप्ता, मोती लाल, (1982) "ब्रज सेन्ट्रम ऑफ इण्डिया कल्चर" आगम कला प्रकाशन, दिल्ली
12. ग्रीन वुड, डी.जे. (2003) ट्यूरिजम एज एन एजेंट ऑफ चेंज, ऑस्ट्रेलियना ज्योग्राफीकल स्टेडिज, मेलबोर्न, पृ.सं. 128–42
13. डेन, एस.एस., (1977) "एनोमी इगो, इनहेसं में ट एण्ड ट्यूरिज्म" एनल्स ऑफ ट्यूरिज्म रिसर्च वाल्यूम–4
14. डोडस आर एण्ड माथुर, एन., (1993) "ट्यूरिज्म एण्ड इकोनोमिक सिस्टम" इन्टरनेशनल, जे मानग ट्यूर
15. जैन, हुकम चन्द एण्ड माली, नारायण (2012) राजस्थान इतिहास एवं संस्कृति एन्साइक्लोपीडिया, जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर पृ. 220, 242

16ण तिवारी, एस.पी, (1993) ''पर्यटन योजना और विकास'', राजस्थान पत्रिका केशरगढ़, जयपुर रविवारीय परिशिष्ठ पृ.सं. 1
17ण नेगी, जे.एम.एस. (1982) ''ट्यूरिज्म एण्ड होटलरिंग ए वर्ल्ड वाइड इण्डस्ट्री'' न्यू दिल्ली, पृ.सं. 2
18ण नेगी जे. (1995) ट्यूरिज्म डवलपमेन्ट एण्ड रिसोटर्न कंजरवेशन,
19ण मान पब्लिकेशन, देहरादून पृ. स. 27–3
20ण नीरज, जयसिंह एवं शर्मा (2010) राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
21ण लक्ष्मीनारायण नाथूरामका (2012–13) राजस्थान की अर्थव्यवस्था, कॉलेज बुक हाउस, चौड़ा रास्ता, जयपुर पृ.सं. 205–212
22ण व्यास, राजेश कुमार (2011) पर्यटन उद्‌भव एवं विकास (तृतीय संस्करण) राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
23ण व्यास, राजेश कुमार (2011) सांस्कृतिक पर्यटन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
24ण सिंह टी.वी., (1973) ''उत्तर भारत के पर्यटन का भौगोलिक चित्रण'' दी नेशनल ज्योग्राफिकल जनरल ऑफ इण्डिया वोलयूम 19, पार्ट 2, पृ.सं. 98–100